Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre

ISSN: 2582-2004
Volume 06, Issue 02

DOI: 10.46523/jarssc.06.02.07
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

बच्चों पर मीडिया हिंसा के प्रभाव का अध्ययन

नवीन सिंह

शोध छात्र मनोविज्ञान विभाग

का. सु. साकेत स्नातकोत्तर महाविद्यालय अयोध्या (फैजाबाद)

प्रो० प्रणय कुमार त्रिपाठी

मनोविज्ञान विभाग का० सु० साकेत पी० जी० कॉलेज अयोध्या (उ०प्र०)

सारः

यह अध्ययन बच्चों पर उनकी विभिन्न संज्ञानात्मक विकासात्मक विशेषताओं और विभिन्न प्रकार के मीडिया के संपर्क की आवृत्ति के आधार पर मीडिया हिंसा के विभिन्न रूपों के प्रभावों में समानता और अंतर का सारांश प्रस्तुत करता है। शिक्षा, कला, विज्ञान, खेल और संस्कृति के क्षेत्र में मीडिया एक बहुत ही उपयोगी उपकरण साबित हुआ है। बच्चे अपने समय का एक बड़ा हिस्सा टेलीविजन, फिल्में देखने, वीडियो गेम खेलने और इंटरनेट पर बिताते हैं। मीडिया हिंसा सार्वजनिक स्वास्थ्य के लिए खतरा है, साथ ही इससे वास्तविक दुनिया में हिंसा और आक्रामकता में वृद्धि होती है। हाल के दिनों में हमने देखा है कि मीडिया हिंसा और हिंसक वीडियो गेम का बच्चों और उनके दिन–प्रतिदिन के व्यवहार पर बहुत नकारात्मक प्रभाव पड़ा है। वर्तमान अध्ययन मीडिया हिंसा और बच्चों के आक्रामक व्यवहार पर इसके प्रभावों के बीच संबंधों पर केंद्रित है, जिसे वे प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हिंसक सामग्री देखकर चित्रित करते हैं। यह अध्ययन समान या संबंधित क्षेत्रों में किए गए कई अन्य अध्ययनों पर आधारित है।

मुख्य शब्दः बच्चों, मीडिया, हिंसा, प्रभाव, अध्ययन

परिचय

बच्चों पर मीडिया हिंसा का प्रभाव आज के समाज में महत्वपूर्ण चिंता और रुचि का विषय है। मीडिया प्लेटफार्मों के प्रसार और हिंसक सामग्री की आसान पहुंच के साथ, यह समझना महत्वपूर्ण है कि ऐसी सामग्री के संपर्क में आने से बच्चों के व्यवहार, भावनाओं और संज्ञानात्मक विकास पर क्या प्रभाव पड़ता है। इस शोध पत्र का उद्देश्य मीडिया हिंसा और बच्चों पर इसके प्रभावों के बीच

Received: 14.07.2023 **Accepted:** 11.08.2023 **Published**: 11.08.2023

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 06, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.06.02.07
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

जटिल संबंधों का पता लगाना और उनका विश्लेषण करना है, जिसमें बाल विकास और कल्याण के लिए अंतर्निहित तंत्र और निहितार्थ को समझने पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

हाल के दशकों में, मीडिया परिदृश्य में नाटकीय परिवर्तन आया है, तकनीकी प्रगति ने मीडिया सामग्री के विभिन्न रूपों तक चौबीसों घंटे पहुंच को सक्षम किया है। टेलीविजन कार्यक्रमों और फिल्मों से लेकर वीडियो गेम और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म तक, बच्चों को लगातार मीडिया सामग्री की एक विस्तृत श्रृंखला से अवगत कराया जाता है, जिसमें हिंसा और आक्रामकता के चित्रण भी शामिल हैं। यह प्रदर्शन बच्चों के दृष्टिकोण, विश्वास और व्यवहार पर मीडिया हिंसा के संभावित प्रभाव के बारे में महत्वपूर्ण प्रश्न उठाता है।

मीडिया हिंसा और बच्चों पर इसके प्रभावों के बारे में चिंता 20वीं सदी के मध्य में शुरू हुई जब शोधकर्ताओं और नीति निर्माताओं ने दर्शकों के व्यवहार पर मीडिया सामग्री के प्रभाव को पहचानना शुरू किया। प्रारंभिक अध्ययन, जैसे कि बंडुरा के सामाजिक शिक्षण सिद्धांत, ने इस बात पर प्रकाश डाला कि बच्चे अवलोकन संबंधी शिक्षा के माध्यम से आक्रामक व्यवहार कैसे सीख सकते हैं, खासकर जब मीडिया में हिंसक मॉडल के संपर्क में आते हैं। बाद के शोध ने इन निष्कर्षों पर विस्तार किया, हिंसा के प्रति बच्चों की धारणाओं को आकार देने, आक्रामकता के प्रति असंवेदनशीलता और वास्तविक जीवन की हिंसा के प्रति असंवेदनशीलता को आकार देने में मीडिया हिंसा की भूमिका की जांच की।

इस मुद्दे का दायरा व्यक्तिगत व्यवहार से परे सार्वजनिक स्वास्थ्य और सुरक्षा के संबंध में सामाजिक चिंताओं तक फैला हुआ है। विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) हिंसा को एक महत्वपूर्ण सार्वजनिक स्वास्थ्य समस्या के रूप में पहचानता है, जिसका जीवन भर शारीरिक और मानसिक कल्याण पर प्रभाव पड़ता है। बच्चों के संदर्भ में, मीडिया हिंसा के संपर्क में आने से आक्रामकता में वृद्धि, सहानुभूति में कमी और हिंसक उत्तेजनाओं में वृद्धि हुई है।

इसके अलावा, मीडिया में हिंसा का चित्रण अक्सर आक्रामकता को ग्लैमराइज करता है, हिंसक व्यवहार को सामान्य बनाता है और इसके परिणामों को तुच्छ बनाता है। यह सामान्यीकरण बच्चों को हिंसा के प्रभाव के प्रति असंवेदनशील बना सकता है, जिससे कल्पना और वास्तविकता के बीच की रेखा धुंधली हो सकती है। परिणामस्वरूप, बच्चे आक्रामक व्यवहार को अधिक स्वीकार करने

Received: 14.07.2023 **Accepted:** 11.08.2023 **Published**: 11.08.2023

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 06, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.06.02.07
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

वाले, हिंसा के पीड़ितों के प्रति कम सहानुभूति रखने वाले और मीडिया सामग्री में देखे गए हिंसक कृत्यों की नकल करने की अधिक संभावना वाले हो सकते हैं।

सैद्धांतिक ढांचा

बच्चों पर मीडिया हिंसा के प्रभाव को समझने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण की आवश्यकता है जिसमें विभिन्न सैद्धांतिक दृष्टिकोण शामिल हों। ऐसा ही एक ढांचा जनरल एग्रेसन मॉडल (जीएएम) है, जो मानता है कि मीडिया हिंसा के संपर्क में आने से संज्ञानात्मक, भावनात्मक और उत्तेजना संबंधी प्रक्रियाएं प्रभावित हो सकती हैं, जिससे व्यवहार में अल्पकालिक और दीर्घकालिक परिवर्तन हो सकते हैं। जीएएम यह समझाने के लिए संज्ञानात्मक, सामाजिक और भावनात्मक कारकों को एकीकृत करता है कि मीडिया हिंसा का प्रदर्शन आक्रामक व्यवहार में कैसे योगदान देता है।

इसके अतिरिक्त, खेती सिद्धांत से पता चलता है कि मीडिया सामग्री का दीर्घकालिक संपर्क व्यक्तियों की वास्तविकता की धारणा को आकार देता है, उनके विश्वासों, मूल्यों और दृष्टिकोण को प्रभावित करता है। मीडिया हिंसा के संदर्भ में, हिंसक सामग्री का लंबे समय तक संपर्क एक ''नीच दुनिया'' में विश्वास पैदा कर सकता है, जहां आक्रामकता और संघर्ष को प्रचलित और सामान्य के रूप में देखा जाता है। यह विश्वदृष्टि हिंसा को कायम रखने के एक चक्र में योगदान कर सकती है, जहां बच्चों सहित व्यक्ति, मीडिया कथाओं में चित्रित हिंसक व्यवहारों को आत्मसात करते हैं और दोहराते हैं।

मीडिया हिंसा

शब्द ''मीडिया हिंसा'' का तात्पर्य एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति के विरुद्ध शारीरिक स्तर पर किए गए किसी भी हिंसक कृत्य से है, जिसे टेलीविजन पर दर्शाया जाता है, न कि किसी सुझाए गए ऑफ–स्क्रीन जहर के। मीडिया हिंसा मीडिया सामग्री हिंसा के समान है, जो एक ऐसी घटना है जहां टेलीविजन, रेडियो, फिल्में, समाचार पत्र और पत्रिकाओं जैसे बड़े पैमाने पर मीडिया की सामग्री में निहित हिंसा वितरित की जाती है और दर्शकों के वास्तविक जीवन में बातचीत करने के तरीके को प्रभावित करती है। मीडिया हिंसा की परिभाषाएँ भी विकसित हुई हैं क्योंकि हिंसा के इस रूप के बारे में सिद्धांत विकसित हुए हैं, मीडिया में हिंसा के दृश्य या हिंसा के तत्व दर्शकों को और

Received: 14.07.2023 **Accepted:** 11.08.2023 **Published**: 11.08.2023

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre

ISSN: 2582-2004
Volume 06, Issue 02

DOI: 10.46523/jarssc.06.02.07
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

अधिक हिंसक बनने के लिए सिखाने की क्षमता रखते हैं। हिंसक मीडिया वह मीडिया हो सकता है जो व्यक्तियों को जानबूझकर दूसरे व्यक्तियों को नुकसान पहुंचाते हुए चित्रित करता है। परिभाषा में 'व्यक्ति' एक कार्टून चरित्र हो सकता है जो वास्तविक दुनिया में मौजूद नहीं है, या एक वास्तविक व्यक्ति, या बीच में कुछ भी हो सकता है।

मीडिया हिंसा से तात्पर्य टेलीविजन शो, फिल्में, वीडियो गेम और ऑनलाइन सामग्री सहित मीडिया के विभिन्न रूपों में हिंसक कृत्यों, आक्रामकता या हानिकारक व्यवहार के चित्रण से है। व्यक्तियों, विशेषकर बच्चों और किशोरों पर इसके संभावित प्रभाव के बारे में चिंताओं के कारण इस विषय ने महत्वपूर्ण ध्यान आकर्षित किया है। अनुसंधान ने व्यवहार, दृष्टिकोण और मानसिक स्वास्थ्य पर मीडिया हिंसा के प्रभावों का पता लगाया है, अक्सर हिंसा के प्रति असंवेदनशीलता, बढ़ती आक्रामकता और कम सहानुभूति जैसे मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

बच्चों पर मीडिया हिंसा का प्रभाव दशकों से बहस और अध्ययन का विषय रहा है। कुछ अध्ययनों से पता चलता है कि मीडिया हिंसा के बार–बार संपर्क में आने से व्यक्ति असंवेदनशील हो सकते हैं, जिससे वास्तविक जीवन में हिंसा के प्रति भावनात्मक प्रतिक्रिया कम हो सकती है। यह आक्रामक व्यवहार के विकास में भी योगदान दे सकता है, खासकर उन बच्चों में जो अभी भी सामाजिक मानदंडों और व्यवहार संबंधी सीमाओं को सीख रहे हैं। इसके अतिरिक्त, मीडिया हिंसा को बच्चों और किशोरों में वास्तविक दुनिया की हिंसा के प्रति चिंता, भय और असंवेदनशीलता के बढ़ते स्तर से जोड़ा गया है।

मीडिया मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण से, यह समझना महत्वपूर्ण है कि मीडिया हिंसा अनुभूति, भावनाओं और व्यवहार को कैसे प्रभावित करती है। शोधकर्ता अक्सर मीडिया हिंसा के प्रकार और तीव्रता, मीडिया प्रभावों के प्रति संवेदनशीलता में व्यक्तिगत अंतर और संभावित नकारात्मक परिणामों को कम करने में माता–पिता की मध्यस्थता की भूमिका जैसे कारकों की जांच करते हैं। मीडिया हिंसा का प्रभाव जटिल है और विभिन्न कारकों से प्रभावित होता है, जिसमें वह संदर्भ जिसमें इसका उपभोग किया जाता है, दर्शक की उम्र और विकासात्मक चरण, और व्यक्ति के वातावरण में कम करने या बढ़ाने वाले कारकों की उपस्थिति शामिल है।

Received: 14.07.2023 **Accepted:** 11.08.2023 **Published**: 11.08.2023

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre

ISSN: 2582-2004
Volume 06, Issue 02

DOI: 10.46523/jarssc.06.02.07
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

आपके शोध पत्र में, मीडिया मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य से बच्चों के व्यवहार और मानसिक स्वास्थ्य पर मीडिया हिंसा के बहुमुखी प्रभाव की खोज अध्ययन के इस महत्वपूर्ण और विकसित क्षेत्र में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकती है।

मीडिया हिंसा का वर्गीकरण

मीडिया हिंसा को विशेष रूप से टीवी और फिल्म हिंसा, गेम हिंसा और ट्यून हिंसा में विभाजित किया गया है। वीडियो गेम और संगीत की तुलना में बच्चे टीवी देखने में अधिक समय बिताते हैं। तीनों मीडिया में महत्वपूर्ण मीडिया हिंसा की चर्चा की गई, और हिंसा के दृश्यों के प्रति बच्चों का प्रदर्शन हमारी अपेक्षा से कहीं अधिक बेहतर होने की संभावना है। हालाँकि बहुत अधिक मात्रा में, सभी 3 मीडिया का कुछ प्रभाव था। विषयों के सामाजिक–जनसांख्यिकीय, रिश्तेदारों के चक्र और पड़ोस की हिंसा, और शिशु मानसिक स्वास्थ्य लक्षण चर को नियंत्रित करने के बाद, बच्चों की मीडिया हिंसा के तीन मीडिया के संपर्क और बच्चों की शारीरिक आक्रामकता के बीच एक संबंध रहा है।

हाल ही में, हिंसा वाले वीडियो गेम में रुचि बढ़ रही है, क्योंकि अधिक से अधिक वीडियो गेम डिजाइन किए जा रहे हैं और गेमर्स को शारीरिक बातचीत के माध्यम से हिंसक परिस्थितियों में संलग्न करने में सक्षम हैं। अधिक से अधिक बच्चे लंबे समय तक वीडियो गेम खेल रहे हैं। इसके अलावा, उनमें से बड़ी संख्या में वीडियो गेम में हिंसा होती है। जो बच्चे हिंसक वीडियो गेम खेलते हैं वे न केवल हिंसा के दर्शक होते हैं, बल्कि वे इसमें भाग भी लेते हैं। टीवी फिल्मों में शूटिंग के दृश्य देखने की तुलना में पहला–व्यक्ति शूटर गेम अधिक मनोरंजक हो सकता है। चूंकि कई वीडियो गेम हिंसा को प्रोत्साहित करने के लिए मंच–आधारित प्रशंसा प्रणाली का उपयोग करते हैं, इसलिए बच्चे स्वयं प्रतिस्पर्धी आचरण विकसित करने का जोखिम उठाते हैं।

शोधों से पता चलता है कि हिंसक गीतों में हिंसक टीवी और गेम से कई भिन्नताएं होती हैं, क्योंकि इस प्रकार का माध्यम केवल शुद्ध ऑडियो प्रदान करता है और कोई दृश्य रिकॉर्ड नहीं होता है, और प्रसिद्ध गीत के आक्रामक गीतात्मक तत्व आमतौर पर केवल सबसे समर्पित श्रोताओं की सहायता से खोजे जाते हैं। और यह गीत के भीतर की हिंसा है, न कि कोई निश्चित संगीत शैली या संगीतकार जो श्रोताओं की आक्रामकता और आक्रामकता–संबंधी अनुभूति को बढ़ाएगा।

Received: 14.07.2023 **Accepted:** 11.08.2023 **Published**: 11.08.2023

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 06, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.06.02.07
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

बच्चों पर हिंसक मीडिया दृश्यों का प्रभाव

बच्चों पर हिंसक मीडिया दृश्यों का प्रभाव महत्वपूर्ण चिंता और शोध का विषय है। यहां विचार करने योग्य कुछ प्रमुख बिंदु दिए गए हैं:

असंवेदनशीलता: फिल्मों, वीडियो गेम और टीवी शो जैसे हिंसक मीडिया के संपर्क में आने से बच्चे वास्तविक दुनिया की हिंसा के प्रति असंवेदनशील हो सकते हैं। समय के साथ, वे हिंसक कार्यों के परिणामों और गंभीरता के प्रति कम संवेदनशील हो सकते हैं।

आक्रामक व्यवहार: शोध से पता चलता है कि हिंसक मीडिया के संपर्क और बच्चों में आक्रामक व्यवहार में वृद्धि के बीच संबंध है। इसमें शारीरिक आक्रामकता, मौखिक आक्रामकता और शत्रुतापूर्ण दृष्टिकोण शामिल हैं।

नकल: बच्चे अक्सर मीडिया में जो देखते हैं उसकी नकल करते हैं, खासकर जब आक्रामक या हिंसक व्यवहार की बात आती है। इससे वे उन हिंसक कार्यों की नकल कर सकते हैं जिन्हें वे देखते हैं, चाहे वह खेल में हो या वास्तविक जीवन की स्थितियों में।

भय और चिंता: हिंसक मीडिया दृश्य भी बच्चों में भय और चिंता पैदा कर सकते हैं, विशेषकर छोटे बच्चों में जिन्हें कल्पना और वास्तविकता के बीच अंतर करने में कठिनाई हो सकती है। यह बुरे सपने, बढ़ी हुई चिंता और कुछ गतिविधियों या स्थानों से परहेज के रूप में प्रकट हो सकता है।

भावनात्मक असंवेदनशीलता: बार–बार हिंसक मीडिया सामग्री के संपर्क में आने से भावनात्मक असंवेदनशीलता हो सकती है, जहां बच्चे हिंसा, पीड़ा या संकट के दृश्यों के प्रति भावनात्मक रूप से कम प्रतिक्रियाशील हो जाते हैं।

संज्ञानात्मक प्रभाव: कुछ अध्ययनों से पता चलता है कि हिंसक मीडिया के संपर्क से ध्यान, निर्णय लेने और समस्या–समाधान जैसी संज्ञानात्मक प्रक्रियाओं पर असर पड़ सकता है, हालांकि सटीक तंत्र और दीर्घकालिक प्रभावों की अभी भी जांच चल रही है।

माता–पिता और शैक्षिक प्रभाव: माता–पिता का मार्गदर्शन और शैक्षिक हस्तक्षेप हिंसक मीडिया के नकारात्मक प्रभावों को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। एक्सपोजर को सीमित करना, बच्चों के साथ मीडिया सामग्री पर चर्चा करना और मनोरंजन और सीखने के वैकल्पिक रूपों को बढ़ावा देना हिंसक मीडिया दृश्यों के प्रभाव को कम करने में मदद कर सकता है।

Received: 14.07.2023 **Accepted:** 11.08.2023 **Published**: 11.08.2023

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 06, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.06.02.07
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

यह ध्यान रखना आवश्यक है कि व्यक्तिगत अंतर, जैसे स्वभाव, पारिवारिक वातावरण और सामाजिक प्रभाव, यह भी तय कर सकते हैं कि बच्चे हिंसक मीडिया पर कैसे प्रतिक्रिया करते हैं। चल रहे शोध का उद्देश्य इन जटिलताओं को और समझना और बच्चों में स्वस्थ मीडिया उपभोग की आदतों को बढ़ावा देने के लिए रणनीति विकसित करना है।

निष्कर्ष

यह पेपर मुख्य रूप से प्रस्तावित आक्रामकता संस्करण के मूल्यांकन के आधार पर समूहों, बच्चों पर मीडिया हिंसा के परिणामों का विश्लेषण करता है। आमतौर पर, मीडिया हिंसा के अतिरिक्त संपर्क के परिणामस्वरूप अधिक आक्रामकता होती है, हालांकि बच्चों के बीच आक्रामक व्यवहार के मानसिक तंत्र में उनके संज्ञानात्मक सुधार की विभिन्न श्रेणियों, मीडिया के प्रकार और उनके प्रचार की अवधि के कारण उतार–चढ़ाव होता है। इसके अलावा, बच्चों के व्यवहार को अनुशासित करने में मध्यस्थ की भूमिका निभाते हैं। बच्चों की मीडिया हिंसा के प्रति संवेदनशीलता को कम करने में अधिक सक्षम हैं, और एक गेम डेवलपर के दृष्टिकोण से, गेम के लक्षित दर्शकों को निश्चित रूप से प्रभावित करने के लिए वीडियो गेम में हिंसक व्यवहार के बजाय प्रो–सोशल पर विचार किया जा सकता है।

अधिकांश बच्चे लगभग हर दिन कुछ न कुछ प्रकार की मीडिया हिंसा देखते हैं, चाहे वह सूचना पर हो या नहीं, किसी अच्छी एनिमेटेड फिल्म में, इंटरनेट पर, टीवी डिस्प्ले पर या किसी फिल्म में। ये एक्सपोजर, चाहे अल्पावधि या लंबी अवधि के हों, नकारात्मक मानसिक परिणाम दे सकते हैं, जैसे प्रतिस्पर्धी व्यवहार में वृद्धि और हिंसक कृत्यों के प्रति उत्साह का फीका चरण। यह अनुमान लगाने के लिए बड़े नमूनों के साथ नए अनुदैर्ध्य अध्ययनों की आवश्यकता है क्योंकि यह होना चाहिए कि मीडिया हिंसा के लिए सामान्य प्रारंभिक जीवन का जोखिम अत्यधिक हिंसा के खतरे को कैसे बढ़ाएगा। अंत में, भारत में, मीडिया के प्रभाव पर, विशेष रूप से अधिक आधुनिक मीडिया गैजेट्स पर, बच्चों की फिटनेस पर और मीडिया के कामकाज में सुधार के लिए लगभग हस्तक्षेप पर सीमित शोध हैं, एक बेहतर साक्ष्य आधार की आवश्यकता है। लेकिन विदेशों में किए गए अध्ययन बच्चों में आक्रामकता पैदा करने में मीडिया की भूमिका के बारे में पूर्ण आकार के साक्ष्य प्रदान करते हैं जो वास्तव में सांस्कृतिक विविधताओं को जन्म देते हैं और निष्कर्ष पूरी तरह से तुलनीय नहीं होंगे।

Received: 14.07.2023 **Accepted:** 11.08.2023 **Published**: 11.08.2023

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.

Journal of Advance Research in Science and Social Science (JARSSC)
Publisher: Indian Mental Health & Research Centre
ISSN: 2582-2004
Volume 06, Issue 02
DOI: 10.46523/jarssc.06.02.07
Multidisciplinary, Open Access
Impact Factor: 3.612

मजबूत, संभावित, प्रयोगात्मक, जनसंख्या–आधारित प्रभावशीलता परीक्षणों की आवश्यकता है। उनके देखने के तरीके और देखने के व्यवहार में किस तरह सुधार किया जा सकता है, इस पर बेहतर शोध आवश्यक है।

संदर्भ

किर्श, एस.जे. (2006) युवाओं में कार्टून हिंसा और आक्रामकता। आक्रामकता और हिंसक व्यवहार, 11(6), 547–557।

ह्यूसमैन, एल.आर., और टेलर, एल.डी. (2006) हिंसक व्यवहार में मीडिया हिंसा की भूमिका। सार्वजनिक स्वास्थ्य की वार्षिक समीक्षा, 27, 393–415।

ग्रीटेमेयर, टी., और ओसवाल्ड, एस. (2009) प्रोसोशल वीडियो गेम आक्रामक संज्ञान को कम करते हैं। प्रायोगिक सामाजिक मनोविज्ञान जर्नल, 45(4), 896–900।

बंडुरा, ए. (2001) जनसंचार का सामाजिक संज्ञानात्मक सिद्धांत। मीडिया मनोविज्ञान, 3, 265–299।

बुशमैन, बी. (2002) मानवीय आक्रामकता। मनोविज्ञान की वार्षिक समीक्षा, 53, 27–51.

निक्केन, पी., और जंज, जे. (2006) बच्चों के वीडियोगेम खेलने में माता–पिता की मध्यस्थता: माता–पिता और बच्चों की रिपोर्ट की तुलना। सीखना। मीडिया और प्रौद्योगिकी, 31(2), 181–202।

क्रेग ए एंडरसन, ब्रैड जे बुशमैन (2001) आक्रामक व्यवहार, आक्रामक अनुभूति, आक्रामक प्रभाव, शारीरिक उत्तेजना और प्रोसोशल व्यवहार पर हिंसक वीडियो गेम के प्रभाव: वैज्ञानिक साहित्य की एक मेटा–विश्लेषणात्मक समीक्षा। मनोवैज्ञानिक विज्ञान, 12(5) 353–359.

Received: 14.07.2023 **Accepted:** 11.08.2023 **Published**: 11.08.2023

This work is licensed and distributed under the terms of the Creative Commons Attribution 4.0 International License (https://creativecommons.org/licenses/by/4.0), which permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any Medium, provided the original work is properly cited.